इस मास में विशेषः साधना दीक्षा

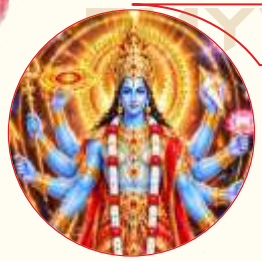

श्रीमद्भगवत् चैतन्यता श्रीकृष्ण सर्वकला सिद्धि साधना

मोक्षदा एकादशी युक्त गीता जयन्ती - 20 दिसम्बर

श्रीकृष्ण षोडशकला पूर्ण व्यक्तित्व हैं, ऐसे व्यक्ति युग को **परिवर्तित** करने की **सामर्थ्य** रखते हैं। यह **साधना** सम्पन्न करने से **साधक** अपने **जीवन** में **गीता** के **गुण-ज्ञान** को अपने भीतर **आत्मसात** कर **अनुकूलता** प्राप्त करता है। उसके **जीवन** में **भोग** के साथ **योग का मार्ग** भी **प्रशस्त** होता है। जिसकी **पूर्णता** के लिये बड़े से बड़ा **साधक, योगी, संन्यासी** भी **प्रयत्नशील** रहता है, क्योंकि बिना **भोग-योग** के **मेल** से **इच्छायें अतृप्त** रहती हैं, और यदि एक भी **इच्छा** रह गयी तो पुनः **जन्म-मरण** की **क्रियाओं** से **गुजरना** ही पड़ेगा।



त्रिपुर भैरवी साधना

त्रिपुर भैरवी जयन्ती - 23 दिसम्बर

दस महाविद्याओं में **भगवती त्रिपुर भैरवी षष्ठ क्रम** में आती हैं। **त्रिपुर भैरवी** को **भगवती आद्या काली** का ही **स्वरूप** माना गया है। **सांसारिक आध्यात्मिक जीवन** में व्यक्ति के **अनेक बंधनों** में से **सर्वाधिक कठिन बंधन** है उसकी **वासनायें**। **तंत्र** इसी पर **आघात** कर व्यक्ति को एक **नया आयाम** दे देता है। **तंत्र** केवल **वासनाओं** पर **आघात** करता है, न कि **व्यक्ति की मूल** चेतना पर। इनकी **साधना** से **साधक** को **समाज** में **यश, सम्मान,** समाज में **प्रतिष्ठा** तथा **वर्चस्व** प्राप्त होता है।

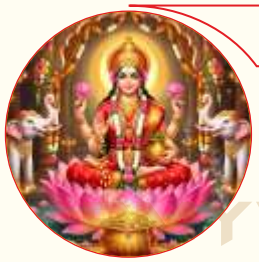

नववर्ष सर्वोन्नति साधना

नूतन वर्ष चैतन्य दिवस - 01 जनवरी

नव का तात्पर्य है **निर्माण** करना अर्थात् **जीवन** में निरन्तर **नवीन ज्ञान, चेतना, आर्थिक स्रोत, धन-धान्य** का **सृजन** करते रहना। ताकि वर्ष के **प्रथम दिवस** से ही **सुस्थितियों** का **प्रादुर्भाव** हो और **साधक भौतिक** तथा **आध्यात्मिक जीवन** में **सफलता** अर्जित कर सकें। इस **साधना** के माध्यम से व्यक्ति के **शरीर** में एक विशेष प्रकार की **तेजस्विता** और **दिव्यता** आ जाती है, उसके जीवन में व्याप्त **दुःख, पीड़ा, निराशा, कष्ट** समाप्त होकर **श्रेष्ठता, दिव्यता, आनन्द** और **पूर्णता** प्राप्ति **संभव** हो पाता है तथा उसे **भौतिक** और **आध्यात्मिक** दोनों पक्षों में **सफलता** प्राप्त होती ही है।



सूर्य साधना

मकर संक्रान्ति - 14 जनवरी

मकर संक्रान्ति में **सूर्य हेमन्त ऋतु** से **शिशिर ऋतु** में प्रवेश करता है तथा यह **दक्षिणायन** से **उत्तरायण** में आता है। **उत्तर दिशा उदय** का प्रतीक मानी गयी है तथा **दक्षिण दिशा अस्त** की **प्रतीक** मानी गयी है। अतः यदि **साधक** को **सूर्य** के समान **तेजस्वी** बनना है, जीवन में **आरोग्य, कायाकल्प, मानसिक शक्ति** का **पूर्ण विकास** और **नेत्रों** में **सम्मोहन** लाना है तो **मकर संक्रान्ति** पर **सूर्य साधना** अवश्य सम्पन्न करनी चाहिये।

साधना एक **साधक** के जीवन का **अभिन्न अंग** है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव **सद्गुरूदेव** के **हृदय** में एक **विशिष्ट स्थान** प्राप्त करते हैं। ये **विशिष्ट साधनायें** सम्पन्न करने के लिए **कैलाश सिद्धाश्रम** में सम्पर्क करें।